Chapter तेरह
श्रीमद्भागवत की महिमा

इस अन्तिम अध्याय में श्री सूत गोस्वामी ने प्रत्येक पुराण के विस्तार के साथ-साथ श्रीमद्भागवत की कथावस्तु, उसके उद्देश्य, उसके भेंट-रूप दिये जाने की विधि, ऐसी भेंट देने की महिमा तथा इसके कीर्तन करने तथा सुनने की महिमा का वर्णन किया है।

पुराणों का समग्र विस्तार ४ लाख श्लोकों में है जिनमें से अठारह हजार श्लोक *श्रीमद्भागवत* में हैं। इस *श्रीमद्भागवत* का उपदेश भगवान् नारायण ने ब्रह्मा को दिया था। इसकी कथाएँ पदार्थ से वैराग्य उत्पन्न कराती हैं और इसमें सारे वेदान्त का सार निहित है। जो व्यक्ति *श्रीमद्भागवत* को भेंटस्वरूप देता है उसे परम पद प्राप्त होगा। सारे पुराणों में *श्रीमद्भागवत* सर्वश्रेष्ठ है और यह वैष्णवों को सर्वाधिक प्रिय वस्तु है। यह परमहंसों के लिए उपलब्ध निर्मल परम ज्ञान को प्रकट करता है और सकाम कर्म के फलों से मुक्त होने की विधि भी बताता है—यह विधि ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति से ओतप्रोत है।

इस तरह *भागवत* की महिमा बताकर सूत गोस्वामी श्री नारायण का ध्यान आदि परब्रह्म के रूप में करते हैं, जो नितान्त शुद्ध, कल्मषरहित, शोक से रहित तथा अमर है। तत्पश्चात् वे सबसे बड़े योगी श्री शुकदेव को नमस्कार करते हैं, जो परब्रह्म से अभिन्न हैं। अन्त में भक्तिपूर्वक स्तुति करते हुए सूत गोस्वामी भगवान् श्री हरि को नमस्कार करते हैं, जो सारा कष्ट हरने वाले हैं।

सूत उवाच

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-

वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥ १ ॥

शब्दार्थ

सूतः उवाच—सूत गोस्वामी ने कहा; यम्—जिसको; ब्रह्मा—ब्रह्मा; वरुण-इन्द्र-रुद्र-मरुतः—तथा वरुण, इन्द्र, रुद्र और मरुत्गण; स्तुन्वन्ति—स्तुति करते हैं; दिव्यैः—दिव्य; स्तवैः—स्तुतियों द्वारा; वेदैः—वेदों समेत; स—सहित; अङ्ग—सहायक शाखाएँ; पद-क्रम—मंत्रों का विशेष अनुक्रम; उपनिषदैः—तथा उपनिषद; गायन्ति—गाते हैं; यम्—जिसको; साम-गाः—सामवेद के गायक; ध्यान—ध्यान-समाधि में; अवस्थित—स्थित; तत्-गतेन—उन पर स्थिर; मनसा—मन के भीतर; पश्यन्ति—देखते हैं; यम्—जिसको; योगिनः—योगीजन; यस्य—जिसका; अन्तम्—अन्त; न विदुः—नहीं जानते; सुर-असुर-गणाः—सारे देवता तथा असुर; देवाय—भगवान् को; तस्मै—उसको; नमः—नमस्कार।

सूत गोस्वामी ने कहा : ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र तथा मरुत्गण दिव्य स्तुतियों का उच्चारण करके तथा वेदों को उनके अंगों, पद-क्रमों तथा उपनिषदों समेत बाँच कर जिनकी स्तुति करते हैं, सामवेद के गायक जिनका सदैव गायन करते हैं, सिद्ध योगी अपने को समाधि में स्थिर करके और अपने को उनके भीतर लीन करके जिनका दर्शन अपने मन में करते हैं तथा जिनका पार किसी देवता या असुर द्वारा कभी भी नहीं पाया जा सकता—ऐसे भगवान् को मैं सादर नमस्कार करता हूँ।

पृष्ठे भ्राम्यदमन्दमन्दरगिरिग्रावाग्रकण्डूयना-
न्निद्रालोः कमठाकृतेर्भगवतः श्वासानिलाः पान्तु वः ।
यत्संस्कारकलानुवर्तनवशाद्वेलानिभेनाम्भसां
यातायातमतन्द्रितं जलनिधेर्नाद्यापि विश्राम्यति ॥ २ ॥

शब्दार्थ

पृष्ठे—उनकी पीठ पर; भ्राम्यत्—चक्कर लगाता; अमन्द—अत्यधिक भारी; मन्दर-गिरि—मन्दराचल के; ग्राव-अग्र—पत्थरों की नोंके; कण्डूयनात्—खुरचने से; निद्रालोः—उनींदा हो जाता है; कमठ-आकृतेः—कछुवे के रूप का; भगवतः—भगवान् का; श्वास—श्वास से निकली; अनिलाः—वायुएँ; पान्तु—रक्षा करें; वः—तुम सबों की; यत्—जिसका; संस्कार—उच्छिष्ट का; कला—रंचमात्र; अनुवर्तन-वशात्—पीछे चलने के फलस्वरूप; वेला-निभेन—जिससे वह प्रवाह के तुल्य है; अम्भसाम्—जल का; यात-आयातम्—आना-जाना; अतन्द्रितम्—अविरत; जल-निधेः—समुद्र का; न—नहीं; अद्य अपि—आज भी; विश्राम्यति—रुकता है।

जब भगवान् कूर्म (कछुवे) के रूप में प्रकट हुए तो उनकी पीठ भारी, घूमने वाले मन्दराचल पर स्थित नुकीले पत्थरों के द्वारा खरोंची गई जिसके कारण भगवान् उनींदे हो गये। इस सुप्तावस्था में भगवान् की श्वास से उत्पन्न वायुओं द्वारा आप सबों की रक्षा हो। उसी काल से, आज तक, समुद्री ज्वारभाटा पवित्र रूप में आ-जाकर भगवान् के श्वास-निश्वास का अनुकरण करता आ रहा है।

तात्पर्य : कभी कभी फूँक मारने से खुजली की अनुभूति में कमी आती है। इसी प्रकार, श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर बतलाते हैं कि भगवान् के श्वास लेने से ज्ञानियों के मन की

खुजलाहट घट सकती है। इसी तरह, इन्द्रियतृप्ति में लगे बद्धजीवों की भी इन्द्रियों की खुजलाहट घट सकती है। इस तरह भगवान् कूर्म—कूर्मावतार—की वायुमयी श्वास का ध्यान करने से सभी प्रकार के बद्धजीव जगत के अभावों से छुटकारा पा सकते हैं और मुक्त आध्यात्मिक पद को प्राप्त हो सकते हैं। मनुष्य को चाहिए कि अपने हृदय के भीतर अनुकूल मन्द समीर की भाँति भगवान् कूर्म की लीलाओं को बहने दे। तब उसे निश्चित रूप से आध्यात्मिक शान्ति मिल सकेगी।

पुराणसङ्ख्यासम्भूतिमस्य वाच्यप्रयोजने ।
दानं दानस्य माहात्म्यं पाठादेश्च निबोधत ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

पुराण—पुराणों की; सङ्ख्या—(श्लोकों की) गिनती का; सम्भूतिम्—योग; अस्य—इस भागवत के; वाच्य—विषयवस्तु; प्रयोजने—तथा उद्देश्य; दानम्—भेंटस्वरूप देने की विधि; दानस्य—ऐसी भेंट देने की; माहात्म्यम्—महिमा; पाठ-आदेः—पढ़ने आदि का; च—तथा; निबोधत—कृपया सुनें।

अब मुझसे सभी पुराणों की श्लोक संख्या सुनिये। तब इस भागवत पुराण के मूल विषय तथा उद्देश्य, इसे भेंट में देने की सही विधि, ऐसी भेंट देने का माहात्म्य और अन्त में इस ग्रंथ के सुनने तथा कीर्तन करने का माहात्म्य सुनिये।

तात्पर्य : *श्रीमद्भागवत* समस्त पुराणों में सर्वश्रेष्ठ है। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर बतलाते हैं कि अब अन्य पुराणों का वर्णन उसी तरह किया जायेगा जिस तरह कि राजा की स्तुति करते समय उसके सहायकों के नामों का उल्लेख किया जाता है।

ब्राह्मं दश सहस्राणि पाद्मं पञ्चोनषष्टि च ।
श्रीवैष्णवं त्रयोविंशच्चतुर्विंशति शैवकम् ॥ ४ ॥
दशाष्टौ श्रीभागवतं नारदं पञ्चविंशति ।
मार्कण्डं नव वाह्नं च दशपञ्च चतुःशतम् ॥ ५ ॥
चतुर्दश भविष्यं स्यात्तथा पञ्चशतानि च ।
दशाष्टौ ब्रह्मवैवर्तं लैङ्गमेकादशैव तु ॥ ६ ॥
चतुर्विंशति वाराहमेकाशीतिसहस्रकम् ।
स्कान्दं शतं तथा चैकं वामनं दश कीर्तितम् ॥ ७ ॥
कौर्मं सप्तदशाख्यातं मात्स्यं तत्तु चतुर्दश ।
एकोनविंशत्सौपर्णं ब्रह्माण्डं द्वादशैव तु ॥ ८ ॥
एवं पुराणसन्दोहश्चतुर्लक्ष उदाहृतः ।
तत्राष्टदशसाहस्रं श्रीभागवतं इष्यते ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

ब्राह्मम्—ब्रह्म पुराण में; दश—दस; सहस्राणि—हजार; पाद्मम्—पद्म पुराण में; पञ्च-ऊन-षष्टि—साठ में पाँच कम; च—तथा; श्री-वैष्णवम्—विष्णु पुराण में; त्रयः-विंशत्—तेईस; चतुः-विंशति—चौबीस; शैवकम्—शिव पुराण में; दश-अष्टौ—अठारह; श्री-भागवतम्—श्रीमद्भागवत में; नारदम्—नारद पुराण में; पञ्च-विंशति—पच्चीस; मार्कण्डम्—मार्कण्डेय पुराण में; नव—नौ; वाह्नम्—अग्नि पुराण में; च—तथा; दश-पञ्च-चतुः-शतम्—पन्द्रह हजार चार सौ; चतुः-दश—चौदह; भविष्यम्—भविष्य पुराण में; स्यात्—से युक्त; तथा—इसके अतिरिक्त; पञ्च-शतानि—पाँच सौ (श्लोक); च—तथा; दश-अष्टौ—अठारह; ब्रह्म-वैवर्तम्—ब्रह्मवैवर्त पुराण में; लैङ्गम्—लिंग पुराण में; एकादश—ग्यारह; एव—निस्सन्देह; तु—तथा; चतुः-विंशति—चौबीस; वाराहम्—वराह पुराण में; एकाशीति-सहस्रकम्—इक्यासी हजार; स्कान्दम्—स्कन्द पुराण में; शतम्—सौ; तथा—और; च—तथा; एकम्—एक; वामनम्—वामन पुराण में; दश—दस; कीर्तितम्—कहा जाता है; कौर्मम्—कूर्म पुराण में; सप्त-दश—सत्रह; आख्यातम्—कहा जाता है; मात्स्यम्—मत्स्य पुराण में; तत्—वह; तु—तथा; चतुः-दश—चौदह; एक-ऊन-विंशत्—उन्नीस; सौपर्णम्—गरुड़ पुराण में; ब्रह्माण्डम्—ब्रह्माण्ड पुराण में; द्वादश—बारह; एव—निस्सन्देह; तु—तथा; एवम्—इस तरह; पुराण—पुराणों का; सन्दोहः—योगफल; चतुः-लक्षः—चार लाख; उदाहृतः—बताया जाता है; तत्र—उसमें; अष्ट-दश-साहस्रम्—अठारह हजार; श्री-भागवतम्—श्रीमद्भागवत में; इष्यते—कहा जाता है।

_ब्रह्म पुराण_ में दस हजार, पद्म पुराण में पचपन हजार, श्री विष्णु पुराण में तेईस हजार, शिव पुराण में चौबीस हजार तथा श्रीमद्भागवत में अठारह हजार श्लोक हैं। नारद पुराण में पच्चीस हजार हैं, मार्कण्डेय पुराण में नौ हजार, अग्नि पुराण में पन्द्रह हजार चार सौ, भविष्य पुराण में चौदह हजार पाँच सौ, ब्रह्मवैवर्त पुराण में अठारह हजार तथा लिंग पुराण में ग्यारह हजार श्लोक हैं। वराह पुराण में चौबीस हजार, स्कन्द पुराण में इक्यासी हजार एक सौ, वामन पुराण में दस हजार, कूर्म पुराण में सत्रह हजार, मत्स्य पुराण में चौदह हजार, गरुड़ पुराण में उन्नीस हजार तथा ब्रह्माण्ड पुराण में बारह हजार श्लोक हैं। इस तरह समस्त पुराणों की कुल श्लोक संख्या चार लाख है। पुनः, इनमें से अठारह हजार श्लोक अकेले _श्रीमद्भागवत_ के हैं।

तात्पर्य : श्रील जीव गोस्वामी ने *मत्स्य पुराण* से निम्नलिखित उद्धरण दिया है—

अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवतीसुतः।
भारताख्यानमखिलं चक्रे तदुपबृंहितम्॥
लक्षणैकेन तत् प्रोक्तं वेदार्थपरिबृंहितम्।
वाल्मीकिनापि यत् प्रोक्तं रामोपाख्यानमुत्तमम्॥
ब्रह्मणाभिहितं तच्च शतकोटिप्रविस्तरात्।
आहृत्य नारदेनैव वाल्मीकाय पुनः पुनः॥
वाल्मीकिना च लोकेषु धर्मकामार्थसाधनम्।
एवं सपादाः पञ्चैते लक्षास्तेषु प्रकीर्तिताः॥

"अठारहों पुराणों की रचना करने के बाद सत्यवती पुत्र व्यासदेव ने सम्पूर्ण *महाभारत* की रचना की जिसमें समस्त पुराणों का सार है। इसमें एक लाख से भी अधिक श्लोक हैं और यह वेद के सभी भावों से पूर्ण है। इसके अतिरिक्त भगवान् रामचन्द्र की लीलाओं का वर्णन वाल्मीकि द्वारा किया गया है, जिसे मूलतः ब्रह्मा ने सौ करोड़ श्लोकों में कहा था। बाद में उस रामायण को

नारद ने संक्षिप्त किया और उसे वाल्मीकि से कहा जिन्होंने इसे मानव जाति के समक्ष प्रस्तुत किया जिससे मनुष्य धर्म, काम तथा अर्थ की प्राप्ति कर सकें। इस तरह समस्त पुराणों तथा इतिहासों के श्लोकों की कुल ज्ञात संख्या ५,२५,००० है।''

श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर इंगित करते हैं कि इस ग्रंथ के प्रथम स्कंध के तृतीय अध्याय में सूत गोस्वामी ने ईश्वर के अवतारों की सूची देने के बाद यह विशेष पद जोड़ दिया है—*कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्* अर्थात् कृष्ण आदि भगवान् हैं। इसी तरह सारे पुराणों का उल्लेख करने के बाद सूत गोस्वामी ने *श्रीमद्भागवत* का पुन: उल्लेख यह बताने के लिए किया है कि यह समस्त पौराणिक ग्रंथों में प्रमुख है।

इदं भगवता पूर्वं ब्रह्मणे नाभिपङ्कजे ।
स्थिताय भवभीताय कारुण्यात्सम्प्रकाशितम् ॥ १० ॥

शब्दार्थ

इदम्—इसे; भगवता—भगवान् द्वारा; पूर्वम्—पहले; ब्रह्मणे—ब्रह्मा से; नाभि-पङ्कजे—नाभि से निकले कमल पर; स्थिताय—स्थित; भव—संसार से; भीताय—भयभीत; कारुण्यात्—दया करके; सम्प्रकाशितम्—पूरीतरह प्रकट किया।

भगवान् ने सर्वप्रथम ब्रह्मा को सम्पूर्ण *श्रीमद्भागवत* प्रकाशित की। उस समय ब्रह्मा, संसार से भयभीत होकर, भगवान् की नाभि से निकले कमल पर आसीन थे।

तात्पर्य : भगवान् कृष्ण ने इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि के पूर्व ब्रह्मा से *श्रीमद्भागवत* प्रकाशित की जैसाकि *पूर्वम्* शब्द से सूचित है। अपरंच, *भागवत* का प्रथम श्लोक कहता है—*तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये*—भगवान् कृष्ण ने ब्रह्मा के हृदय में पूर्णज्ञान का विस्तार किया। चूँकि बद्धात्माएँ केवल उन क्षणिक वस्तुओं का अनुभव कर सकते हैं, जो उत्पन्न, पालित तथा विनष्ट होती हैं, अत: वे आसानी से यह नहीं समझ पाते कि *श्रीमद्भागवत* नित्य दिव्य ग्रंथ है, जो परब्रह्म से अभिन्न है।

मुण्डक उपनिषद् (१.१.१) में कहा गया है—

ब्रह्मा देवानां प्रथम: सम्बभूव
विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता।
स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठाम्
अर्थवाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह॥

''समस्त देवताओं में सर्वप्रथम ब्रह्मा का जन्म हुआ। वे इस ब्रह्माण्ड के स्रष्टा तथा इसके रक्षक भी हैं। उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को आत्म-विज्ञान की शिक्षा दी जो ज्ञान की अन्य सभी शाखाओं का आधार है।'' किन्तु अपने उच्च पद के बावजूद भी ब्रह्मा तब भी भगवान् की मायाशक्ति के प्रभाव से भयभीत रहते हैं। इस तरह यह शक्ति प्राय: दुर्लंघ्य प्रतीत होती है। किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु इतने दयालु हैं कि उन्होंने पूर्वी तथा दक्षिणी भारत में अपने प्रचार-कार्य के दौरान, मुक्त रूप से कृष्णभावनामृत का वितरण हर एक को किया और उनसे निवेदन किया कि वे *भगवद्गीता* के शिक्षक बनें। चैतन्य महाप्रभु ने, जोकि साक्षात् कृष्ण हैं, लोगों को यह कह कर

प्रोत्साहित किया, ''मेरे आदेश से तुम भगवान् कृष्ण के सन्देश के शिक्षक बनो और इस देश की रक्षा करो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि माया की तरंगें तुम्हारी प्रगति को कभी रोक नहीं पायेंगी।'' (चैतन्य-चरितामृत मध्य ७.१२८)

यदि हम पापकर्मों को त्याग कर चैतन्य महाप्रभु के संकीर्तन आन्दोलन में निरन्तर लगे रहें, तो हमें अपने निजी जीवन में तथा अपने प्रचार के प्रयासों में भी सफलता प्राप्त होगी।

आदिमध्यावसानेषु वैराग्याख्यानसंयुतम् ।
हरिलीलाकथाव्रातामृतानन्दितसत्सुरम् ॥ ११ ॥
सर्ववेदान्तसारं यद्ब्रह्मात्मैकत्वलक्षणम् ।
वस्त्वद्वितीयं तन्निष्ठं कैवल्यैकप्रयोजनम् ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

आदि—प्रारम्भ; मध्य—मध्य; अवसानेषु—तथा अन्त में; वैराग्य—भौतिक वस्तुओं के परित्याग से सम्बन्धित; आख्यान—कथाओं से; संयुतम्—पूर्ण; हरि-लीला—भगवान् हरि की लीलाओं का; कथा-व्रात—अनेक विवेचनाओं का; अमृत—अमृत से; आनन्दित—आनन्दयुक्त बनाये गये; सत्-सुरम्—सन्त भक्तों तथा देवताओं; सर्व-वेदान्त—सारे वेदान्तों का; सारम्—सार; यत्—जो; ब्रह्म—परब्रह्म; आत्म-एकत्व—आत्मा से अभिन्नता; लक्षणम्—लक्षणों से युक्त; वस्तु—वास्तविकता; अद्वितीयम्—अद्वितीय; तत्-निष्ठम्—मुख्य विषयवस्तु के रूप में; कैवल्य—एकान्तिक भक्ति; एक—एकमात्र; प्रयोजनम्—चरम लक्ष्य।

***श्रीमद्भागवत* आदि से अन्त तक ऐसी कथाओं से पूर्ण है, जो भौतिक जीवन से वैराग्य की ओर ले जाने वाली हैं। इसमें भगवान् हरि की दिव्य लीलाओं का अमृतमय विवरण भी है, जो सन्त भक्तों तथा देवताओं को आनन्द देने वाला है। यह भागवत समस्त वेदान्त दर्शन का सार है क्योंकि इसकी विषयवस्तु परब्रह्म है, जो आत्मा से अभिन्न होते हुए भी अद्वितीय परम सत्य है। इस ग्रंथ का लक्ष्य परब्रह्म की एकान्तिक भक्ति है।**

तात्पर्य : *वैराग्य* का अर्थ है उन सारी वस्तुओं का परित्याग जिनका परब्रह्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। सन्त भक्त तथा देवता भगवान् की दिव्य लीलाओं के अमृत से प्रोत्साहित होते हैं क्योंकि ये लीलाएँ समस्त वैदिक ज्ञान की सार हैं। वैदिक ज्ञान वस्तुओं के नश्वर अस्तित्व पर बल देते हुए उनकी चरम सत्यता का निषेध करता है। चरम लक्ष्य *वस्तु* है, जो *अद्वितीय* अर्थात् बेजोड़ है। वह अद्वय परब्रह्म दिव्य पुरुष है, जो लौकिक श्रेणियों तथा हमारे भौतिक जगत के पुरुष के लक्षणों से बहुत परे है। इस प्रकार *श्रीमद्भागवत* का चरम उद्देश्य निष्ठावान पाठक को भगवत्प्रेम में प्रशिक्षित करना है। भगवान् कृष्ण अपने नित्य दिव्य गुणों के कारण अत्यन्त प्रिय हैं। इस जगत का सौन्दर्य भगवान् के असीम सौन्दर्य का मन्द प्रतिबिम्ब है। निश्चित रूप से, *श्रीमद्भागवत* लगातार परब्रह्म की महिमा का उद्घोष करता है, अतएव यह परम आध्यात्मिक ग्रंथ है, जो पूर्ण कृष्णभावनामृत में कृष्ण-प्रेम के अमृत का पूर्ण आस्वाद कराता है।

प्रौष्ठपद्यां पौर्णमास्यां हेमसिंहसमन्वितम् ।

ददाति यो भागवतं स याति परमां गतिम् ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

प्रौष्ठपद्याम्—भाद्र मास में; पौर्णमास्याम्—पूर्णमासी के दिन; हेम-सिंह—सोने के सिंहासन पर; समन्वितम्—आसीन; ददाति—भेंट के रूप में देता है; यः—जो; भागवतम्—श्रीमद्भागवत को; सः—वह; याति—जाता है; परमाम्—परम; गतिम्—गन्तव्य को।

यदि कोई व्यक्ति भाद्र मास की पूर्णमासी को सोने के सिंहासन पर रख कर *श्रीमद्भागवत* का दान उपहार के रूप में देता है, तो उसे परम दिव्य गन्तव्य प्राप्त होगा।

तात्पर्य : *श्रीमद्भागवत* को सोने के सिंहासन पर रखना चाहिए क्योंकि यह समस्त वाङ्मय का राजा है। भाद्र मास की पूर्णमासी को वाङ्मय का राजा-रूप सूर्य, सिंह राशि पर स्थित होता है और ऐसा दिखता है मानो राज-सिंहासन पर बैठाया गया हो (ज्योतिष के अनुसार सूर्य सिंह राशिमें सर्वोच्च स्थिति पर होता है) इस तरह मनुष्य बिना किसी बंधन के इस परम दिव्य ग्रंथ *श्रीमद्भागवत* की पूजा कर सकता है।

राजन्ते तावदन्यानि पुराणानि सतां गणे ।
यावद्भागवतं नैव श्रूयतेऽमृतसागरम् ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

राजन्ते—चमकते हैं; तावत्—तब तक; अन्यानि—अन्य; पुराणानि—पुराण; सताम्—साधु पुरुषों की; गणे—सभा में; यावत्—जब तक; भागवतम्—श्रीमद्भागवत को; न—नहीं; एव—निस्सन्देह; श्रूयते—सुना जाता है; अमृत-सागरम्—अमृत का सागर।

अन्य सारे पुराण तब तक सन्त भक्तों की सभा में चमकते हैं जब तक अमृत के महासागर श्रीमद्भागवत को नहीं सुना जाता।

तात्पर्य : अन्य वैदिक ग्रंथ तथा संसार के अन्य शास्त्र तब तक प्रधान बने रहते हैं जब तक *श्रीमद्भागवत* को भलीभाँति सुना और समझा नहीं जाता। *श्रीमद्भागवत* अमृत का सागर है और सर्वोच्च ग्रंथ है। *श्रीमद्भागवत* के श्रद्धापूर्ण श्रवण, वाचन तथा वितरण से संसार पवित्र हो जायेगा और अन्य निकृष्ट ग्रंथ फीके पड़ जायेंगे।

सर्ववेदान्तसारं हि श्रीभागवतमिष्यते ।
तद्रसामृततृप्तस्य नान्यत्र स्याद्रतिः क्वचित् ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

सर्व-वेदान्त—समस्त वेदान्त दर्शन का; सारम्—सार; हि—निस्सन्देह; श्री-भागवतम्—श्रीमद्भागवत; इष्यते—कहा जाता है कि; तत्—इसके; रस-अमृत—अमृतमय स्वाद से; तृप्तस्य—तृप्त होने वाले के लिए; न—नहीं; अन्यत्र—दूसरी जगह; स्यात्—है; रतिः—आकर्षण; क्वचित्—कभी।

***श्रीमद्भागवत* को समस्त वैदिक दर्शन का सार कहा जाता है। जिसे इसके अमृतमय रस से तुष्टि हुई है, वह कभी अन्य किसी ग्रंथ के प्रति आकृष्ट नहीं होगा।**

निम्नगानां यथा गङ्गा देवानामच्युतो यथा ।
वैष्णवानां यथा शम्भुः पुराणानामिदं तथा ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

निम्न-गानाम्—समुद्र की ओर बह कर जाने वाली नदियों का; यथा—जिस तरह; गङ्गा—गंगा नदी; देवानाम्—समस्त देवों में; अच्युतः—अच्युत भगवान्; यथा—जिस तरह; वैष्णवानाम्—भगवान् विष्णु के भक्तों में; यथा—जिस तरह; शम्भुः—शिव; पुराणानाम्—पुराणों में; इदम्—यह; तथा—उसी प्रकार से।

जिस तह गंगा समुद्र की ओर बहने वाली समस्त नदियों में सबसे बड़ी है, भगवान् अच्युत देवों में सर्वोच्च हैं और भगवान् शम्भु (शिव) वैष्णवों में सबसे बड़े हैं, उसी तरह *श्रीमद्भागवत* समस्त पुराणों में सर्वोपरि है।

क्षेत्राणां चैव सर्वेषां यथा काशी ह्यनुत्तमा ।
तथा पुराणव्रातानां श्रीमद्भागवतं द्विजाः ॥ १७॥

शब्दार्थ

क्षेत्राणाम्—पवित्र स्थलों में; च—तथा; एव—निस्सन्देह; सर्वेषाम्—समस्त; यथा—जिस तरह; काशी—बनारस; हि—निस्सन्देह; अनुत्तमा—अद्वितीय; तथा—उसी तरह; पुराण-व्रातानाम्—समस्त पुराणों में; श्रीमत्-भागवतम्—श्रीमद्भागवत; द्विजाः—हे ब्राह्मणो।

हे ब्राह्मणो, जिस तरह पवित्र स्थानों में काशी नगरी अद्वितीय है, उसी तरह समस्त पुराणों में *श्रीमद्भागवत* सर्वश्रेष्ठ है।

श्रीमद्भागवतं पुराणममलं यद्वैष्णवानां प्रियं
यस्मिन्पारमहंस्यमेकममलं ज्ञानं परं गीयते ।
तत्र ज्ञानविरागभक्तिसहितं नैष्कर्म्यमाविस्कृतं
तच्छृण्वन्सुपठन्विचारणपरो भक्त्या विमुच्येन्नरः ॥ १८ ॥

शब्दार्थ

श्रीमत्-भागवतम्—श्रीमद्भागवत; पुराणम्—पुराण; अमलम्—पूर्णतया शुद्ध; यत्—जो; वैष्णवानाम्—वैष्णवों को; प्रियम्—अत्यन्त प्रिय; यस्मिन्—जिसमें; पारमहंस्यम्—सर्वोच्च भक्तों द्वारा प्राप्य; एकम्—एकमात्र; अमलम्—नितान्त शुद्ध; ज्ञानम्—ज्ञान; परम्—परम; गीयते—गाया जाता है; तत्र—उसमें; ज्ञान-विराग-भक्ति-सहितम्—ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति के साथ; नैष्कर्म्यम्—समस्त भौतिक कर्म से मुक्ति; आविष्कृतम्—प्रकाशित किया गया है; तत्—वह; शृण्वन्—सुनते हुए; सु-पठन्—भलीभाँति कीर्तन करते हुए; विचारण-परः—जो समझने का इच्छुक है; भक्त्या—भक्ति के साथ; विमुच्येत्—पूरी तरह छूट जाता है; नरः—मनुष्य।

श्रीमद्भागवत निर्मल पुराण है। यह वैष्णवों को अत्यन्त प्रिय है क्योंकि यह परमहंसों के शुद्ध तथा सर्वोच्च ज्ञान का वर्णन करने वाला है। यह भागवत समस्त भौतिक कर्म से छूटने के साधन के साथ ही दिव्य ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति की विधियों को प्रकाशित करता है। जो कोई भी *श्रीमद्भागवत* को गम्भीरतापूर्वक समझने का प्रयास करता है, जो समुचित ढंग से श्रवण करता है और भक्तिपूर्वक कीर्तन करता है, वह पूर्ण मुक्त हो जाता है।

तात्पर्य : चूँकि *श्रीमद्भागवत* प्रकृति के गुणों द्वारा कल्मष से पूरी तरह मुक्त है, अतएव इसमें

अद्वितीय आध्यात्मिक सौन्दर्य पाया जाता है और इसीलिए यह भगवद्भक्तों को प्रिय है। *पारमहंस्यम्* शब्द सूचित करता है कि पूर्णतया मुक्तात्माएँ भी *श्रीमद्भागवत*को सुनने और सुनाने के लिए उत्सुक रहती हैं। जो लोग मुक्त होने के लिए प्रयासरत हैं उन्हें इस ग्रंथ को श्रद्धा तथा भक्ति सहित श्रवण करना चाहिए तथा वाचन द्वारा इसकी सेवा करनी चाहिए।

कस्मै येन विभासितोऽयमतुलो ज्ञानप्रदीपः पुरा
तद्रूपेण च नारदाय मुनये कृष्णाय तद्रूपिणा ।
योगीन्द्राय तदात्मनाथ भगवद्राताय कारुण्यत-
स्तच्छुद्धं विमलं विशोकममृतं सत्यं परं धीमहि ॥ १९ ॥

शब्दार्थ

कस्मै—ब्रह्मा को; येन—जिसके द्वारा; विभासितः—पूरी तरह प्रकट किया गया; अयम्—यह; अतुलः—अतुलनीय; ज्ञान—दिव्य ज्ञान का; प्रदीपः—दीपक; पुरा—बहुत काल पहले; तत्-रूपेण—ब्रह्मा के रूप में; च—तथा; नारदाय—नारद को; मुनये—महर्षि को; कृष्णाय—कृष्ण द्वैपायन व्यास को; तत्-रूपिणा—नारद के रूप में; योगि-इन्द्राय—योगियों में श्रेष्ठ, शुकदेव; तत्-आत्मना—नारद के रूप में; अथ—तब; भगवत्-राताय—परीक्षित महाराज को; कारुण्यतः—कृपावश; तत्—वह; शुद्धम्—शुद्ध; विमलम्—निष्कलुष; विशोकम्—शोक से मुक्त; अमृतम्—अमर; सत्यम्—सत्य का; परम्—परम; धीमहि—मैं ध्यान करता हूँ।

मैं उन शुद्ध तथा निष्कलुष परब्रह्म का ध्यान करता हूँ जो दुख तथा मृत्यु से रहित हैं और जिन्होंने प्रारम्भ में इस ज्ञान के अतुलनीय दीपक को ब्रह्मा से प्रकट किया। तत्पश्चात् ब्रह्मा ने इसे नारद मुनि से कहा, जिन्होंने इसे कृष्ण द्वैपायन व्यास से कह सुनाया। श्रील व्यास ने इस भागवत को मुनियों में सर्वोपरि, शुकदेव गोस्वामी, को बतलाया जिन्होंने कृपा करके इसे महाराज परीक्षित से कहा।

तात्पर्य : *श्रीमद्भागवत* के प्रथम श्लोक में कहा गया है—*सत्यं परं धीमहि*—मैं परम सत्य का ध्यान करता हूँ। और इस भव्य दिव्य ग्रंथ के अन्त में भी वही शुभ ध्वनि सुनाई पड़ती है। इस श्लोक में *तद्-रूपेण, तद्-रूपिणा* तथा *तद्-आत्मना* शब्द स्पष्ट सूचित करते हैं कि प्रारम्भ में स्वयं कृष्ण ने यह *श्रीमद्भागवत* ब्रह्मा से कही और फिर नारद मुनि, द्वैपायन व्यास, शुकदेव गोस्वामी तथा अन्य महर्षियों के माध्यम से इसे कहलाते रहे। दूसरे शब्दों में, जब भी सन्त भक्त *श्रीमद्भागवत* का उच्चारण करते हैं, तो यह समझना चाहिए कि स्वयं कृष्ण इस परम सत्य को अपने शुद्ध प्रतिनिधियों के माध्यम से बोल रहे हैं। जो भी व्यक्ति भगवान् के प्रामाणिक भक्तों से यह ग्रंथ विनीत भाव से सुनता है, वह बद्ध अवस्था को पार करके परब्रह्म का ध्यान करने और उनकी सेवा करने के योग्य बन जाता है।

नमस्तस्मै भगवते वासुदेवाय साक्षिणे ।
य इदम्कृपया कस्मै व्याचचक्षे मुमुक्षवे ॥ २० ॥

शब्दार्थ

नमः—नमस्कार; तस्मै—उस; भगवते—भगवान्; वासुदेवाय—वासुदेव को; साक्षिणे—परम साक्षी; यः—जो; इदम्—इस; कृपया—कृपावश; कस्मै—ब्रह्मा को; व्याचचक्षे—बतलाया; मुमुक्षवे—मुक्ति चाहने वाले को।

हम सर्वव्यापक साक्षी भगवान् वासुदेव को नमस्कार करते हैं जिन्होंने कृपा करके ब्रह्मा को यह विज्ञान तब बताया जब वे उत्सुकतापूर्वक मोक्ष चाह रहे थे।

योगीन्द्राय नमस्तस्मै शुकाय ब्रह्मरूपिणे ।
संसारसर्पदष्टं यो विष्णुरातममूमुचत् ॥ २१ ॥

शब्दार्थ

योगि-इन्द्राय—योगियों के राजा को; नमः—नमस्कार; तस्मै—उस; शुकय—शुकदेव गोस्वामी को; ब्रह्म-रूपिणे—परब्रह्म के साकार रूप; संसार-सर्प—संसार रूपी सर्प द्वारा; दष्टम्—काटा हुआ; यः—जिसने; विष्णु-रातम्—महाराज परीक्षित को; अमूमुचत्—मुक्त कर दिया।

मैं श्री शुकदेव गोस्वामी को सादर नमस्कार करता हूँ जो श्रेष्ठ योगी-मुनि हैं और परब्रह्म के साकार रूप हैं। उन्होंने संसार रूपी सर्प द्वारा काटे गये परीक्षित महाराज को बचाया।

तात्पर्य : अब सूत गोस्वामी अपने गुरु शुकदेव गोस्वामी को नमस्कार करते हैं। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर यह स्पष्ट करते हैं कि जिस तरह अर्जुन को भौतिक मोह में डाल दिया गया था जिससे *भगवद्गीता* का प्रवचन हो सके, उसी तरह भगवान् के शुद्ध मुक्त भक्त राजा परीक्षित को मरने का शाप दिया गया जिससे *श्रीमद्भागवत* कही जा सके। वस्तुतः राजा परीक्षित *विष्णुरात* हैं अर्थात् वे शतत् भगवान् के संरक्षण में रहते हैं। शुकदेव गोस्वामी ने शुद्ध भक्त के दयामय स्वभाव को तथा उसकी संगति के प्रबुद्धकारी प्रभाव को दिखाने के लिए राजा को उसके तथाकथित मोह से छुटकारा दिला दिया।

भवे भवे यथा भक्तिः पादयोस्तव जायते ।
तथा कुरुष्व देवेश नाथस्त्वं नो यतः प्रभो ॥ २२ ॥

शब्दार्थ

भवे भवे—जन्म-जन्मांतर; यथा—जिससे; भक्तिः—भक्ति; पादयोः—चरणकमलों पर; तव—तुम्हारे; जायते—उत्पन्न हो; तथा—उसी तरह; कुरुष्व—कीजिये; देव-ईश—हे ईशों के ईश; नाथः—स्वामी; त्वम्—तुम; नः—हमारे; यतः—क्योंकि; प्रभो—हे प्रभु।

हे ईशों के ईश, हे स्वामी, आप हमें जन्म-जन्मांतर तक अपने चरणकमलों की शुद्ध भक्ति का वर दें।

नामसङ्कीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम् ।
प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम् ॥ २३ ॥

शब्दार्थ

नाम-सङ्कीर्तनम्—नाम का सामूहिक कीर्तन; यस्य—जिसका; सर्व-पाप—सारे पापों को; प्रणाशनम्—नष्ट करने वाले; प्रणामः—नमस्कार; दुःख—दुख का; शमनः—शमन करने वाले; तम्—उसको; नमामि—नमस्कार करता हूँ; हरिम्—हरि को; परम्—परम।

मैं उन भगवान् हरि को सादर नमस्कार करता हूँ जिनके पवित्र नामों का सामूहिक कीर्तन सारे पापों को नष्ट करता है और जिनको नमस्कार करने से सारे भौतिक कष्टों से छुटकारा मिल जाता है।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के बारहवें स्कन्द के अन्तर्गत ''श्रीमद्भागवत की महिमा'' नामक तेरहवें अध्याय के श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद के विनीत सेवकों द्वारा रचित तात्पर्य पूर्ण हुए।

यह बारहवाँ स्कन्ध रविवार दिनांक १८ जुलाई १९८२ को गैन्सविले, फ्लोरिडा में पूरा हुआ।

बारहवाँ स्कंध पूर्ण हुआ

हम ॐ विष्णुपाद परमहंस परिव्राजकाचार्य अष्टोत्तरशत श्री श्रीमद् भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद को और उनकी कृपा से वृन्दावन के षड् गोस्वामियों को, श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके नित्य संगियों को, श्री श्री राधाकृष्ण को तथा परम दिव्य ग्रंथ *श्रीमद्भागवत* को सादर नमस्कार करते हैं। श्रील प्रभुपाद की अहैतुकी कृपा से हम श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर, श्रील जीव गोस्वामी, श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर, श्रील श्रीधर स्वामी तथा अन्य महान् वैष्णव आचार्यों के चरणकमलों तक पहुँच पाये और उनकी मुक्त टीकाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके हमने *श्रीमद्भागवत* को पूर्ण करने का विनीत प्रयास किया है। हम अपने गुरु श्रील प्रभुपाद के तुच्छ सेवक हैं और उनकी कृपा से *श्रीमद्भागवत* को प्रस्तुत करके हमें उनकी सेवा करने की अनुमति प्राप्त हो सकी है।

——

श्री श्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः